Rakesh Omprakash Mehra

Neetu, Vikas & Ruchika

Nikhil, Uddhav & Alpesh

Abhishek Raniwala

राकेश मेहरा ने बताए रील और रियल क्रिएटिविटी के मायने

आंत्रप्रिन्योर्स ऑर्गेनाइजेशन के सेशन 'अनलीशिंग द क्रिएटिविटी' में फिल्म-मेकर राकेश ओम प्रकाश मेहरा ने मेंबर्स से चर्चा की। सिटी पैलेस के कैफे में हुए इस टॉक शो के बाद मेंबर्स के लिए पार्टी रखी गई।

Shreya Rawat

• bakul.mathur@dbcorp.in

गवर्नमेंट द्वारा बनाई गई सेंसर बोर्ड रीवैम्प कमेटी का हिस्सा रहे फिल्म-मेकर राकेश ओम प्रकाश मेहरा का मानना है कि इंडियन गवर्नमेंट को समझना होगा कि अब समय पहले जैसा बिलकुल भी नहीं रहा। उन्होंने रील और रियल क्रिएटिविटी और पुराने ढर्रे पर चल रहे सेंसर बोर्ड के बारे में कहा, हम इनफॉर्मेशन और कनेक्टिविटी के दौर में आ चुके हैं और अब किसी भी चीज के बारे में बहुत आसानी से जाना जा सकता है। सेंसर बोर्ड, सेंसरशिप जैसे टूल का इस्तेमाल कर अपनी ही आइडियोलॉजी को दूसरों के बीच पहुंचा रहा है जो बेहद दुखद है। इससे तो अच्छा है कि सेंसर बोर्ड की बिल्डिंग ओल्ड ऐज होम या नाइट क्लब में तब्दील हो जाए क्योंकि सेंसर बोर्ड सनातन और सेंसरशिप निरर्थक हो चुकी है। आंत्रप्रिन्योर्स ऑर्गेनाइजेशन के सेशन 'अनलीशिंग द क्रिएटिविटी' के सिलसिले में जयपुर आए राकेश ओम प्रकाश मेहरा ने आयुष पेड़ीवाल से बातचीत में अपने कॅरिअर और फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े कई किस्से शेयर किए। सिटी पैलेस के कैफे में हुए इस टॉक शो में ईंओ के प्रेजिडेंट अभिषेक रानीवाला और स्पॉउसल चेयर शैली बैद शामिल हुए।

मेहरा ने बताया, 'मेरे कॉलेज सीनियर अरुण जेटली जब इंफॉर्मेशन एंड ब्रॉडकास्ट मिनिस्टर थे तब उन्होंने मेरे साथ श्याम बेनेगल, कमल हसन और गौतम घोष की एक कमेटी बनाई जिन्हें सेंसर बोर्ड रीवैम्प करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। हमने फ्रांस, यूके और अमेरिका के सेंसर बोर्ड को बहुत बारीकी से समझा। लीगल एक्सपर्ट्स से बात की। 6 महीने तक हफ्ते में तीन से चार मीटिंग करते, आखिर हमने सेंसर बोर्ड को सुधारने के लिए नए रूल्स भी दिए लेकिन तब तक अरुण जेटली दूसरे सेक्टर में जा चुके थे।

डिफिकेशन की परेशानी सबसे ज़्यादा भारत और चीन में

मेहरा ने अपनी आने वाली फिल्म 'मेरे प्यारे प्राइम मिनिस्टर' पर चर्चा करते हुए बताया कि इंडिया की 50 परसेंट आबादी ओपन डिफिकेशन से जूझ रही है, चाइना भी इसी कड़ी में है। उन्होंने बताया, "स्लम के बच्चों ने मुझे महसूस कराया कि थर्ड वर्ल्ड बुलाए जाने वाले तबके के पास बेसिक नीड यानी टॉयलेट्स के अलावा सब कुछ है। यहां तक कि टीवी और फ्रिज भी। डायरेक्टर होने के नाते मैं इस तबके की स्थिति को फिल्म के जरिए ही सभी तक पहुंचा सकता था। इंटेंशन अच्छा था इसलिए गुलज़ार, शंकर-अहसान-लॉय और पोलैंड के सिनेमेटोग्राफर की टीम ने मेरे साथ काम करने की हामी भरी।

Nitin, Ashish, Ritesh & Vikas

Kirti, Manish & Ayush

Shweta Kejriwal

Rashi Agarwal

Yash, Vishal & Mayank